# आधुनिक संसार में रूमी का महत्व

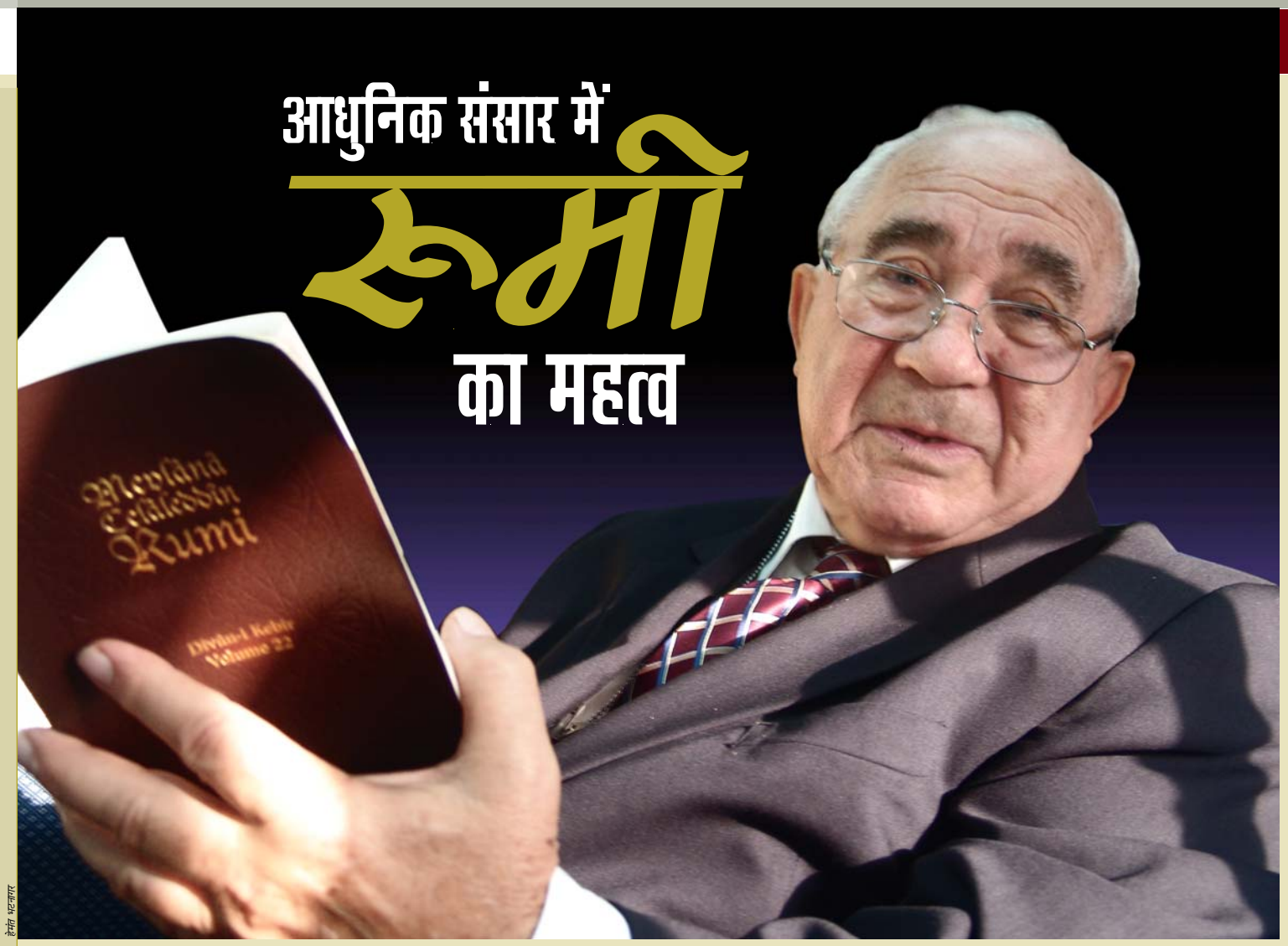


हेमंत पटवारी

**अंजुम नईम** द्वारा **डॉ. नेवित अर्गिन** से बातचीत

सान मातेओ, कैलिफ़ोर्नियावासी तुर्क-अमेरिकी शल्य चिकित्सक और जलालुद्दीन रूमी की कविता के अनुवादक डॉ. नेवित अर्गिन इस फ़ारसी कवि की 800वीं जयंती के सिलसिले में भारत आए थे। वह पिछले 50 बरस से रूमी के जीवन और कृतित्व के अध्ययन में जुटे हैं, जिसका परिणाम रूमी की सम्पूर्ण कविता की अंग्रेजी में 22 खंडों में प्रस्तुति 'बयाज़-ए-कबीर' है। नई दिल्ली में उर्दू स्पैन के सम्पादक अंजुम नईम ने उनसे बातचीत की।

**हमारे युग में रूमी का महत्व और प्रासंगिकता क्या है?**

रूमी सभ्यता और उसकी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था के एकीकरण की शक्ति का प्रतीक रहे हैं। उनकी कविता दुख से भरे दिल और परेशान दिमाग को दिलासा देती है। याद रखिए कि दुनिया जितनी भयानक होगी, मनुष्य का जीवन जितना ही मूल्यहीन होगा, उतनी ही रूमी की कविता की प्रासंगिकता और महत्व बढ़ेगा। आप देख ही रहे हैं कि मनुष्य की क्षमता और उसके खुद तय किए धार्मिक व्यवहार कितने नकारात्मक होते जा रहे हैं। इन स्थितियों में नकारात्मकता के इस रेगिस्तान में एक आध्यात्मिक नखलिस्तान के बिना मनुष्य कैसे जी पाएगा? बहरहाल, मनुष्य को अपनी आस्था के विकल्प के तौर पर जीवन की एक संहिता चाहिए जो उसे अपने समाज, अपने समुदाय में बाहरी व्यक्ति होने से बचा ले। और यहां रूमी एक बेहतरीन मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं। वह एक सचमुच विराट व्यक्तित्व थे, धर्म और नस्ल की बाधा से बहुत ऊपर उठ चुके लेकिन मनुष्यों से गहरे जुड़े रूमी जैसे हमारी दुनिया पर छाया करने वाली एक बहुत बड़ी छतरी हैं।

जरा देखिए वह अपना परिचय कैसे देते है :

*''न मैं ईसाई न यहूदी,*
*न फारसी न मुसलमां*
*न मैं पूरब न मैं पश्चिम*
*न जमीं न आसमां से जनमा''*

और वह किसी धर्म तक सीमित होने या देश और काल की सीमाओं में बंधने से भी इनकार करते हैं।

*''कभी छिपा, रूपोश कभी*
*कभी हाज़िर, ज़ाहिर।*
*कभी मुस्लिम,*
*कभी यहूदी,*
*कभी ईसाई*
*मैं वो मंज़र हूं जो हर सिम्त नया''*

## सवाल जवाब

**रूमी अमेरिका में इतने लोकप्रिय कैसे हो गए?**

इसका जवाब मैं किसी की कही बात से देता हूं, ''अमेरिका में रूमी की लोकप्रियता हमारी ज़बर्दस्त आध्यात्मिक भूख के कारण है।''

यह तो सभी जानते हैं कि अमेरिकी अक्सर औरों की तुलना में अधिक पढ़ते हैं, यहां ज़्यादा पुस्तकें छपती हैं। जहां सामाजिक और राजनीतिक स्थितियां सामान्य नहीं होतीं, वहां आम लोगों को किताबें पढ़ने और उन पर विचार का अवसर नहीं मिल पाता। चूंकि अमेरिकी कई मुद्दों पर विचार करते हैं और उन्हें हल करने की कोशिश करते हैं, इसलिए वे रूमी की ओर खिंचे और उनके विचारों से प्रभावित हुए। तर्क और आत्मा के द्वन्द्व में उलझे बहुआयामी समाज में रूमी जैसे एक नया द्वार खोलते हैं। अमेरिकी समाज में भौतिक समृद्धि है लेकिन ज़रूरी नहीं कि समृद्ध व्यक्ति का जीवन सुखी भी हो। रूमी एक ऐसे सुख से परिचय कराते हैं जो शरीर के साथ आत्मा और दिमाग के साथ दिल का सुख भी है- और यही उनकी लोकप्रियता का आधार है।

अमेरिका में रूमी को लोकप्रिय बनाने का श्रेय प्रोफ़ेसर कोलमैन बार्क्स को जाता है जिन्होंने न केवल अमेरिका के साहित्य प्रेमियों का रूमी से परिचय करवाया बल्कि उनकी कविता का सुन्दर अनुवाद भी प्रस्तुत किया। इससे पहले भी रूमी की कविता के अंग्रेजी अनुवाद उपलब्ध थे लेकिन उनमें जैसे कवि की कल्पना का पंछी कैद था। बर्क्स ने पिंजड़े का दरवाजा खोलकर पंछी को आज़ाद कर दिया और वह खुले गले से गाने, अनंत आकाश में उड़ने लगा।

**रूमी की कविता का अनुवाद कितना कठिन था?**

किसी भी साहित्यिक रचना का अनुवाद कठिन और चुनौतीभरा होता ही है। लेकिन जब रूमी जैसे कवि की आध्यात्मिक कविता का अनुवाद करना हो तो चुनौती कुछ और गम्भीर हो जाती है। रूमी की कविता का एक बड़ा अंतर्निहित खतरा उसका चौंधिया देने वाला काव्यात्मक सौंदर्य है जिसके कारण रूमी की कविता का गूढ़ रहस्य कम ही लोग देख पाते हैं।

रूमी के जीवन और आत्मा को जाने बिना उनकी बात समझ पाना कठिन है। में खुद पेशे से चिकित्सक हूं लेकिन जब मेरी रुचि रूमी की कविता में हुई तो 15 बरस मैंने उसके विचार की तह में जाने में लगाए। सभी पूर्व धारणाओं और विचारों से पूरी मुक्ति पाकर ही आप रूमी के विचार संसार में प्रवेश कर सकते हैं- यह पहली शर्त है। अगर आप और व्यस्तताओं के साथ उनकी रचनाएं पढ़ना चाहें तो रूमी को समझना काफी कठिन काम है। मैं कहूंगा कि इस सिलसिले में मैं काफी सावधान रहा हूं।

**एक बहुआयामी समाज में रूमी की सूफ़ी कविता की क्या भूमिका है?**

सूफ़ीवाद हमें स्वनिर्धारित आस्था की बाध्यताओं से स्वतंत्र करता है। यह मनुष्य को सीधे ईश्वर तक पहुंचने की राह दिखाता है। एक बहुआयामी समाज में विभिन्न स्वनिर्धारित आस्थाएं मनुष्य को ईश्वर के बारे में भ्रमित कर सकती हैं। सूफ़ीवाद मनुष्य को ऐसी बेड़ियों से छुड़ाता है। यही कारण है कि बहुआयामी समाज में इसकी भूमिका कहीं अधिक बड़ी है। भारत हमेशा से ही ईश्वर की तलाश करने वालों का देश रहा है, इसलिए यहां सूफ़ीवाद गहरे पैठा है। मुझे लगता है कि ये समानताएं अमेरिका और भारत को एक-दूसरे के पास लाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी।